25-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**“मीठे बच्चे - यह ड्रामा का खेल एक्यूरेट चल रहा है, जिसका जो पार्ट जिस घड़ी होना चाहिए, वही रिपीट हो रहा है, यह बात यथार्थ रीति समझना है"**

**प्रश्नः- तुम बच्चों का प्रभाव कब निकलेगा? अभी तक किस शक्ति की कमी है?**

**उत्तर:-** जब योग में मजबूत होंगे तब प्रभाव निकलेगा। अभी वह जौहर नहीं है। याद से ही शक्ति मिलती है। ज्ञान तलवार में याद का जौहर चाहिए, जो अभी तक कम है। अगर अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो बेड़ा पार हो जायेगा। यह सेकण्ड की ही बात है।

**ओम् शान्ति।** रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप एक को ही कहा जाता है। बाकी सब हैं आत्मायें। उनको परम आत्मा

Click

जी मेरे मीठे बाबा..

याद करो...

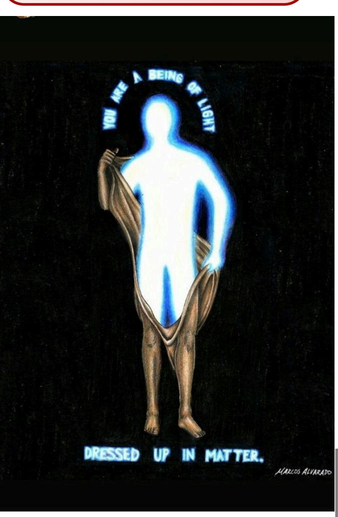


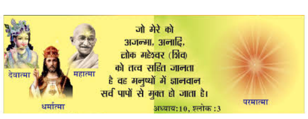

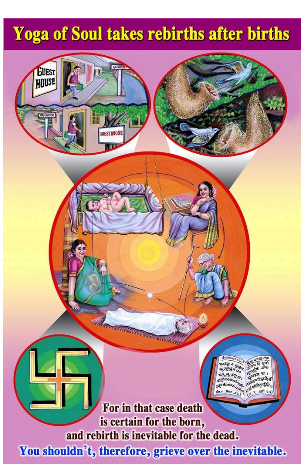


कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं भी हूँ आत्मा। परन्तु मैं परम सुप्रीम सत्य हूँ। मैं ही पतित-पावन, ज्ञान का सागर हूँ। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ भारत में, बच्चों को विश्व का मालिक बनाने। तुम ही मालिक थे ना। अब स्मृति आई है। बच्चों को स्मृति दिलाते हैं - तुम पहले-पहले सतयुग में आये फिर पार्ट बजाते, 84 जन्म भोग अब पिछाड़ी में आ गये हो। तुम अपने को आत्मा समझो। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। आत्मा ही देह के साथ आत्माओं से बात करती है। आत्म-अभिमानी हो करके नहीं रहते हैं तो जरूर देह-अभिमान है। मैं आत्मा हूँ, यह सब भूल गये हैं। कहते भी हैं पाप आत्मा, पुण्य आत्मा, महान् आत्मा। वह फिर परमात्मा तो बन नहीं सकते। कोई भी अपने को शिव कह न सके। शरीरों के शिव नाम तो बहुतों के हैं। आत्मा जब शरीर में प्रवेश करती है तो नाम पड़ता है क्योंकि शरीर से ही पार्ट बजाना होता है। तो मनुष्य फिर शरीर के भान में आ जाते हैं, मैं फलाना हूँ। अभी समझते - हाँ मैं आत्मा हूँ। हमने 84 का पार्ट बजाया है। अभी हम आत्मा को जान

गया हूँ। हम आत्मा सतोप्रधान थी, फिर अभी तमोप्रधान बनी हूँ। बाप आते ही तब हैं जब सब आत्माओं पर कट लगी हुई है। जैसे सोने में खाद पड़ती है ना। तुम पहले सच्चा सोना हो फिर चांदी, तांबा, लोहा पड़कर तुम बिल्कुल काले हो गये हो।

Exclusive Authority of Shiv baba

यह बात और कोई समझा न सके। सब कह देते हैं आत्मा निर्लेप है। खाद कैसे पड़ती है, यह भी बाप ने समझाया है बच्चों को। बाप कहते हैं मैं आता ही भारत में हूँ। जब बिल्कुल तमोप्रधान बन जाते हैं, तब आता हूँ। एक्यूरेट टाइम पर आते हैं। जैसे ड्रामा में एक्यूरेट खेल चलता है ना। जो पार्ट जिस घड़ी होना होगा उस समय फिर रिपीट होगा, उसमें ज़रा भी फर्क पड़ नहीं सकता। वह है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। यह सब बहुत महीन समझने की बातें हैं। बाप कहते हैं तुम्हारा जो पार्ट बजा, वह ड्रामा अनुसार। कोई भी मनुष्य मात्र न रचयिता को, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। ऋषि-मुनि भी नेती-नेती करते गये। अब तुमसे कोई पूछे रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो? तो तुम झट कहेंगे हाँ, सो भी

नेती - नेती

# अभी नहीं तो कभी नहीं

25-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

So, value this time
Don't waste it..

**चढ़ाओ नशा...**

*How lucky and Great we are...!*

तुम सिर्फ अभी ही जान सकते हो फिर कभी नहीं। बाबा ने समझाया है तुम ही मुझ रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। अच्छा, यह लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब होगा, यह जानते होंगे? नहीं, इनमें कोई ज्ञान नहीं। यह तो वण्डर है। तुम कहते हो हमारे में ज्ञान है, यह भी तुम समझते हो। बाप का पार्ट ही एक बार का है। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है - यह लक्ष्मी-नारायण बनने की। बन गये फिर तो पढ़ाई की दरकार नहीं रहेगी। बैरिस्टर बन गया सो बन गया। बाप जो पढ़ाने वाला है, उनको याद तो करना चाहिए। तुमको सब सहज कर दिया है। बाबा बार-बार तुम्हें कहते हैं पहले अपने को आत्मा समझो। मैं बाबा का हूँ। पहले तुम नास्तिक थे, अभी आस्तिक बने हो। इन लक्ष्मी-नारायण ने भी आस्तिक बनकर ही यह वर्सा लिया है, जो अभी तुम ले रहे हो। अभी तुम आस्तिक बन रहे हो। आस्तिक-नास्तिक यह अक्षर इस समय के हैं। वहाँ यह अक्षर ही नहीं। पूछने की बात ही नहीं रह सकती। यहाँ प्रश्न उठते हैं तब तो पूछते हैं - रचता और रचना को जानते

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

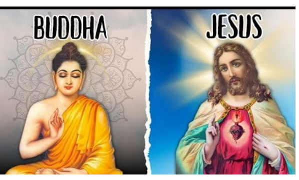

हो? तो कह देते, नहीं। बाप ही आकर अपना परिचय देते हैं और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। बाप है बेहद का मालिक रचता। बच्चों को समझाया गया है और धर्म स्थापक भी यहाँ जरूर आते हैं। तुमको साक्षात्कार कराया था - इब्राहम, क्राइस्ट आदि कैसे आते हैं। वह तो पिछाड़ी में जब बहुत आवाज़ निकलेगा तब आयेंगे। बाप कहते हैं - बच्चे, देह सहित देह के सब धर्मों को त्याग मुझे याद करो। अभी तुम सम्मुख बैठे हो। अपने को देह नहीं समझना है, मैं आत्मा हूँ। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो बेड़ा पार हो जायेगा। सेकण्ड की बात है। मुक्ति में जाने के लिए ही भक्ति आधाकल्प करते हैं। लेकिन कोई भी आत्मा वापिस जा नहीं सकती।

समझा?

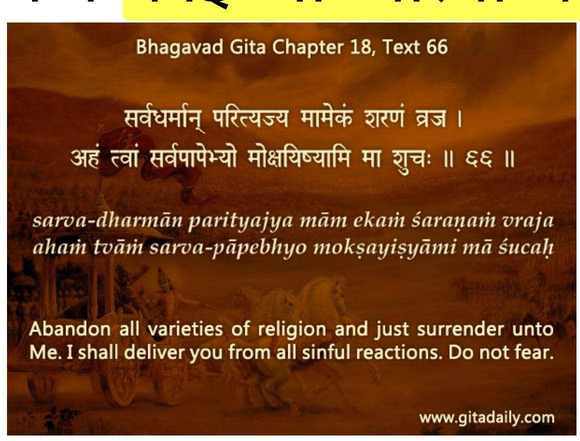

5 हज़ार वर्ष पहले भी बाप ने यह समझाया था अभी भी समझाते हैं। श्रीकृष्ण यह बातें समझा

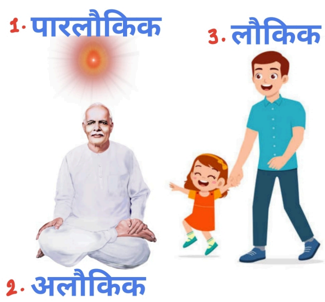


नहीं सकते। उनको बाप भी नहीं कहेंगे। बाप है लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक। हद का बाप लौकिक, बेहद का बाप है - पारलौकिक, आत्माओं का। और एक यह है सगंमयुगी वन्डरफुल बाप, इनको अलौकिक कहा जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा को कोई याद ही नहीं करते। वह हमारा ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर है, यह बुद्धि में नहीं आता है। कहते भी हैं आदि देव, एडम.... परन्तु कहने मात्र। मन्दिरों में भी आदि देव का चित्र है ना। तुम वहाँ जायेंगे तो समझेंगे यह तो हमारा यादगार है। बाबा भी बैठे हैं, हम भी बैठे हैं। यहाँ बाप चैतन्य में बैठे हैं, वहाँ जड़ चित्र रखे हैं। ऊपर में स्वर्ग भी ठीक है, जिन्होंने मन्दिर देखा है वह जानते हैं कि बाबा हमको अब चैतन्य में राजयोग सिखा रहे हैं। फिर बाद में मन्दिर बनाते हैं। यह स्मृति में आना चाहिए कि यह सब हमारे यादगार हैं। यह लक्ष्मी-नारायण अब हम बन रहे हैं। थे, फिर सीढ़ी उतरते आये हैं, अब फिर हम घर जाकर रामराज्य में आयेंगे। पीछे होता है रावणराज्य फिर हम वाम मार्ग में चले जाते हैं। बाप कितना अच्छी

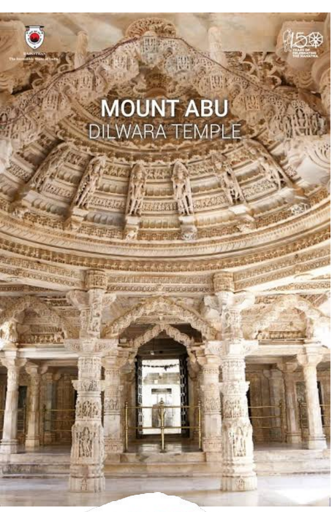

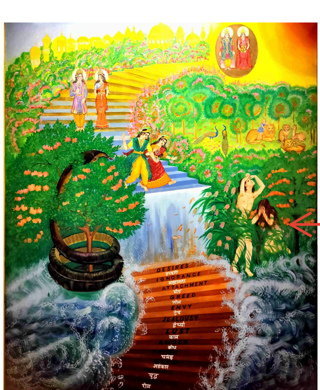

How lucky and Great we are...!

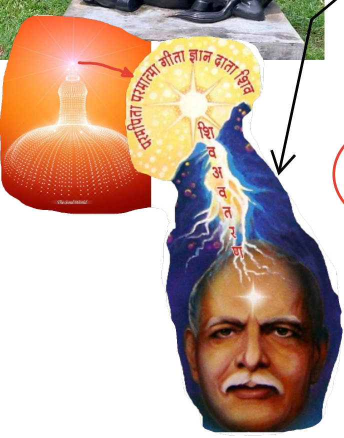

रीति समझाते हैं - इस समय सभी मनुष्य मात्र पतित हैं इसलिए पुकारते हैं - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। दु:ख हर कर सुख का रास्ता बताओ। कहते भी हैं भगवान जरूर कोई वेष में आ जायेगा। अब कुत्ते-बिल्ली, ठिक्कर-भित्तर आदि में तो नहीं आयेंगे। गाया हुआ है भाग्यशाली रथ पर आते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं इस साधारण रथ में प्रवेश करता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं, तुम अभी जानते हो। इनके बहुत जन्मों के अन्त में जब वानप्रस्थ अवस्था होती है तब मैं प्रवेश करता हूँ। भक्ति मार्ग में पाण्डवों के बहुत बड़े-बड़े चित्र बनाये हैं, रंगून में बुद्ध का भी बहुत बड़ा चित्र है। इतना बड़ा कोई मनुष्य होता थोड़ेही है। बच्चों को तो अब हंसी आती होगी, रावण का चित्र कैसा बनाया है। दिन-प्रतिदिन बड़ा करते जाते हैं। यह क्या चीज़ हैं, जो हर वर्ष जलाते हैं। ऐसा कोई दुश्मन होगा! दुश्मन का ही चित्र बनाकर जलाते हैं। अच्छा, रावण कौन है, कब दुश्मन बना है जो हर वर्ष जलाते आते हैं? इस दुश्मन का किसको भी पता नहीं है। उनका

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

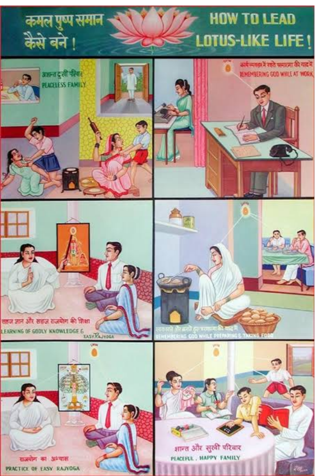

अर्थ कोई बिल्कुल नहीं जानते। बाप समझाते हैं वह है ही रावण सम्प्रदाय, तुम हो राम सम्प्रदाय। अब बाप कहते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान बनो और मुझे याद करते रहो। कहते हैं बाबा हंस और बगुले इकट्ठे कैसे रह सकते हैं, खिट-खिट होती है। सो तो जरूर होगा, सहन करना पड़ेगा। इसमें बड़ी युक्तियाँ भी हैं। बाप को कहा जाता है रांझू रमज़बाज। सब उनको याद करते हैं ना - हे भगवान दु:ख हरो, रहम करो, लिबरेट करो। वो लिबरेटर बाप सबका एक ही है। तुम्हारे पास कोई भी आते हैं तो उनको अलग-अलग समझाओ, कराची में एक-एक को अलग-अलग बैठ समझाते थे।

Coming soon...

तुम बच्चे जब योग में मज़बूत हो जायेंगे तो फिर तुम्हारा प्रभाव निकलेगा। अभी अजुन वह जौहर नहीं है। याद से शक्ति मिलती है। पढ़ाई से शक्ति नहीं मिलती है। ज्ञान तलवार है, उसमें याद का

जौहर भरना है। वह शक्ति कम है। बाप रोज़ कहते रहते हैं - बच्चे, याद की यात्रा में रहने से तुमको ताकत मिलेगी। पढ़ाई में इतनी ताकत नहीं है। याद से तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। तुम अपने लिए ही सब कुछ करते हो। बहुत आये फिर गये। माया भी दुश्तर है। बहुत नहीं आते हैं, कहते हैं ज्ञान तो बहुत अच्छा है, खुशी भी होती है। बाहर गया खलास। ज़रा भी ठहरने नहीं देती। कोई-कोई को बहुत खुशी होती है। ओहो! अब बाबा आये हैं, हम तो चले अपने सुखधाम। बाप कहते हैं - अभी पूरी राजधानी स्थापन ही कहाँ हुई है। तुम इस समय हो ईश्वरीय सन्तान फिर होंगे देवतायें। डिग्री कम हो गई ना। मीटर में प्वाइन्ट होती हैं, इतनी प्वाइन्ट कम। तुम अभी एकदम ऊंच बनते हो फिर कम होते-होते नीचे आ जाते हो। सीढ़ी नीचे उतरना ही है। अब तुम्हारी बुद्धि में सीढ़ी का ज्ञान है। चढ़ती कला, सर्व का भला। फिर धीरे-धीरे उतरती कला होती है। शुरू से लेकर इस चक्र को अच्छी रीति समझना है। इस समय तुम्हारी चढ़ती कला होती है क्योंकि बाप साथ है ना। ईश्वर

v/s

बिन तेरे मैं सहरा(सहरा के हिंदी अर्थ · मरुस्थल, रेगिस्तान, मरुभूमि, वो जगह जहाँ पानी घास और पेड़ आदि कुछ भी न हो) सा हूँ बिन तेरे मैं क़तरा(पानी की बूंद)भी नहीं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Mind It...

Sweet Song at last Pages

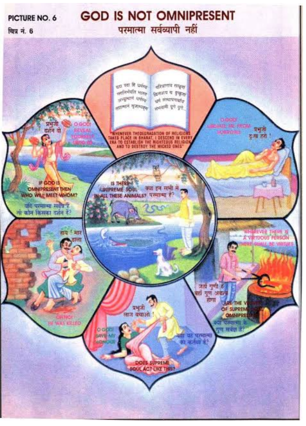


25-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जिसको मनुष्य सर्वव्यापी कह देते हैं, वह बाबा मीठे-मीठे बच्चे कहते रहते हैं और बच्चे फिर बाबा-बाबा कहते रहते हैं। बाबा हमको पढ़ाने आये हैं, आत्मा पढ़ती है। आत्मा ही कर्म करती है। हम आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। इस शरीर द्वारा कर्म करती हूँ। अशान्त अक्षर ही तब कहा जाता है जब दु:ख होता है। बाकी शान्ति तो हमारा स्वधर्म है। बहुत कहते हैं मन की शान्ति हो। अरे आत्मा तो स्वयं शान्त स्वरूप है, उनका घर ही है शान्तिधाम। तुम अपने को भूल गये हो। तुम तो शान्तिधाम के रहने वाले थे, शान्ति वहाँ ही मिलेगी। आजकल कहते हैं एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा हो। वन कास्ट, वन रिलीजन, वन गॉड। अब गवर्मेन्ट लिखती भी है वन गॉड है, फिर सर्वव्यापी क्यों कहते हैं? वन गॉड तो कोई मानता ही नहीं है। तो अब तुमको फिर यह लिखना है। लक्ष्मी-नारायण का चित्र बनाते हो, ऊपर में लिख दो सतयुग में जब इन्हों का राज्य था तो वन गॉड, वन डीटी रिलीजन था। परन्तु मनुष्य कुछ समझते नहीं हैं, अटेन्शन नहीं देते। अटेन्शन उनका जायेगा जो

हमारे ब्राह्मण कुल का होगा। और कोई नहीं समझेंगे इसलिए बाबा कहते हैं अलग-अलग बिठाओ फिर समझाओ। फार्म भराओ तो मालूम पड़ेगा क्योंकि कोई किसको मानने वाला होगा, कोई किसको। सबको इकट्ठा कैसे समझायेंगे। अपनी-अपनी बात सुनाने लग पड़ेंगे। पहले-पहले तो पूछना चाहिए कहाँ आये हो? बी.के. का नाम सुना है? प्रजापिता ब्रह्मा तुम्हारा क्या लगता है? कभी नाम सुना है? तुम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान नहीं हो, हम तो प्रैक्टिकल में हैं। हो तुम भी परन्तु समझते नहीं हो। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

25-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

# धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) मन्दिरों आदि को देखते सदा यह स्मृति रहे कि यह सब हमारे ही यादगार हैं। अब हम ऐसा लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं।

2) गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहना है। हंस और बगुले साथ हैं तो बहुत युक्ति से चलना है। सहन भी करना है।

25-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**वरदान:- एकता और सन्तुष्टता के सर्टीफिकेट द्वारा सेवाओं में सदा सफलतामूर्त भव**

सेवाओं में सफलतामूर्त बनने के लिए दो बातें ध्यान में रखनी है

एक - संस्कारों को मिलाने की युनिटी और

दूसरा स्वयं भी सदा सन्तुष्ट रहो तथा दूसरों को भी सन्तुष्ट करो।

सदा एक दो में स्नेह की भावना से, श्रेष्ठता की भावना से सम्पर्क में आओ तो यह दोनों सर्टीफिकेट मिल जायेंगे।

फिर आपकी प्रैक्टिकल जीवन बाप के सूरत का दर्पण बन जायेगी और उस दर्पण में बाप जो है जैसा है वैसा दिखाई देगा।

**स्लोगन:-** आत्म स्थिति में स्थित होकर अनेक आत्माओं को जीयदान दो तो दुआयें मिलेंगी।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

## अव्यक्त इशारे -

**अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर**

**योग को ज्वाला रूप बनाओ**

जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालो तो नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है,

ऐसे जब बाप के याद के लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो।

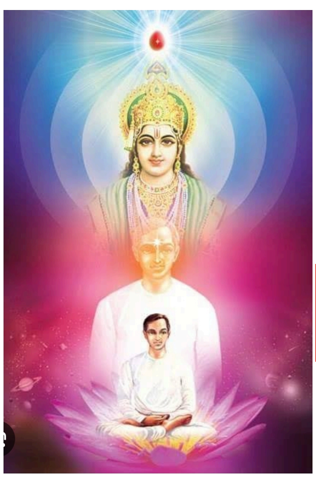

मनुष्य से ब्राह्मण बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते।

लग्न की अग्नि से ऐसा परिवर्तन होता है जो अपनापन कुछ भी नहीं रहता, इसलिए याद को ही ज्वाला रूप कहा है।

58

Attention..!

फाइनल पेपर

निर्मोही हो? नष्टोमोहा हो ना। माताओं को विशेष विघ्न मोह का ही आता है। नष्टोमोहा अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ। अगर ज़रा भी मोह चाहे देह के सम्बन्ध में है तो तीव्र पुरुषार्थी के बजाए पुरुषार्थी में आ जाते। तीव्र पुरुषार्थी हैं फर्स्ट नम्बर, पुरुषार्थी हैं सेकेण्ड नम्बर। क्या भी हो - कुछ भी हो खुशी में नाचते रहो, 'मिरुआ मौत मलूका शिकार' इसको कहते हैं नष्टोमोहा। नष्टोमोहा वाले ही विजय माला के दाने बनते हैं। मोह पर विजय प्राप्त कर ली तो सदा विजयी। पास हो या फुल पास हो? पेपर बहुत आयेंगे, पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। अगर इम्तहान ही

So, Be Prepared

Definition of



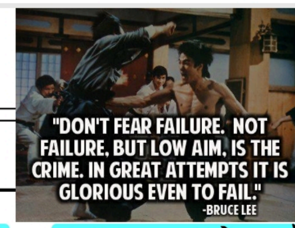


AIM

Simple Logic

न हो तो क्लास चेन्ज कैसे होगा। इसलिए फुल पास होना है - न कि पास होना है।

24/9/25 (01.12.1978)

### 6.4.4 मास्टर सर्वशक्तिवान का तिलक : 25/9/25

अमृतवेले स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान का तिलक दो। सारा दिन तिलकधारी रहने से कभी भी माया सामना नहीं करेगी। तिलक आपके विजय की निशानी है।

# सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

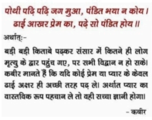

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा 12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

30/11/05

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

Point to be Noted

या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पक्का समझ लो

Short cut

m.m.m.....Imp

Point to be Noted for life time

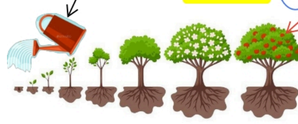

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

**उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।**

*पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।*
*ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥*

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

- कबीर

**Example**

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है
इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।

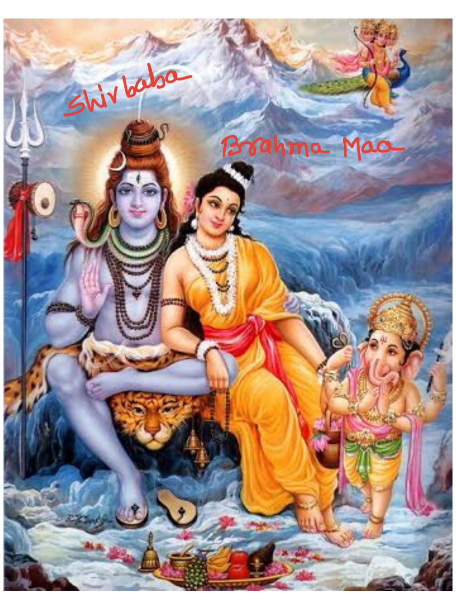


**Example**

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गई किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,
वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',
शिक्षक के सम्बन्ध में-'इर्मानदार' और
गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और
साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?
AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....
क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

हमारे प्राणो से भी प्यारे शिवबाबा - की जिनके बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं हैं।
क्योंकि हम जब उनसे बिछुड़े तब से जैसे की शरीर से रूह निकल जाने के बाद जो शरीर की हालत होती हैं, वैसी ही मुझ आत्मा की हालत थी।
किन्तु अब वो मिल गए हैं तो हम फिर से अपने को जिन्दा महसूस करते हैं।

और भी....
माया की अक्षोहिणी सेना के सामने हमारी अकेले की हैसियत एक चींटी जितनी भी नहीं हैं और अगर प्यारे बाबा साथ/Combined हैं तो उस माया की हैसियत हमारे सामने चींटी से भी पदम् गुना कम हो जाती हैं।

तो आज ये गीत समर्पित है उस प्राणों से प्यारे सच्चे साथी शिवबाबा को...
★■◆●★■◆●★■◆●

link of this song

Click

तेरी साँसों की सांस में
जो हूँ तो मैं हूँ

(ओ मेरे प्राणप्यारे साथी...!
जैसे कोई भी मनुष्य को जिंदा रहने के लिए साँस लेना अनिवार्य है, अगर साँस नहीं तो जीवन नहीं ..

वैसे ही आपकी साँस अर्थात सारे विश्व को संपन्न बनाने के आपके जो कल्याणकारी संकल्प चलते हैं तो उन संकल्पों को पूरा करने के लिए आप जिस निमित को याद करते हो तो वो मैं ही तो हूँ ।)

तेरे ख्वाबों की आंच में
जो हूँ तो मैं हूँ

( इस पतित श्रुष्टि को सम्पूर्ण पावन बनाने का जो आपका ख्वाब हैं - तो उस ख्वाब को पूरा करने अर्थ आपका सर्व श्रेष्ठ instrument/ Right hand भी तो मैं ही हूँ।

In short, आप के संकल्प वा स्वप्न में भी मैं ही तो हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना

(जैसे आप मेरे बिना नहीं रह सकते
वैसे ही आपके होने से ही तो मेरा भी होना/अस्तित्व हैं और मैं जब परमधाम से यहां पार्ट बजाने आती हूं अर्थात आप से दूर होती हूं या आपको खो देती हूं तो जैसे आपको नहीं परंतु स्वयं को ही खो देती हूं
क्युकी जैसे जिस्म और जान/आत्मा एक दूजे के बिना रह नहीं सकते वैसे ही मैं जिस्म हूं और आप मेरी जान/आत्मा।)

तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

(तो... अगर आप हो तो ही मेरा अस्तित्व हैं और
अगर यूँ ही/इस प्रकार ही हम दोनों combined हैं तो ही मैं अपने को जिन्दा पाता हूँ। अर्थात तुम नहीं तो मैं भी नहीं।)

@@@@@@@@

बिन तेरे मेरा क्या है
जिसको सुनू जिसको कहूँ

(ओ मेरे प्राणों के प्राण,
मुझे आप जरा ये तो बताईये की
आप के बिना मेरा इस जहान में हैं ही क्या वा है ही कौन..?
जिसको मैं कुछ कहूँ या फिर जिस से मैं कुछ सुनु...)

बिन तेरे मुझ में क्या है
जिसको जियूं जिस में रहूँ

(या फिर ये बताईये की
आप के बिना मुज मैं रिंचक मात्र भी ऐसा क्या हैं की जिसको मैं जीऊ या फिर जिसमे मैं रहूँ...?)

तुझ में ही दुनिया मेरी है
तेरे एक पल में सदियाँ मेरी

(मेरे प्राणनाथ, मेरे साजन ...
आप में ही तो मेरी सारी दुनिया हैं अर्थात अभी ही साकार मनुष्य श्रुष्टि मेरे लिए भस्म हुई पड़ी हैं।
और आप के साथ मैं अभी इस संगम पर जो एक पल भी बिताता हूँ तो वो मुझे आपके साथ सदियाँ बिताने का अनुपम सुख प्रदान करता हैं और उस ही सुख में मैं सदैव रहना चाहता हूँ।)

बिन तेरे मैं सहरा(सहरा के हिंदी अर्थ · मरुस्थल, रेगिस्तान, मरुभूमि, वो जगह जहाँ पानी घास और पेड़ आदि कुछ भी न हो) सा हूँ

(तो आप जब मेरे साथ होते हो तो मैं आत्मा मधुबन सी खिल जाती हूँ और
आप से बिछड़कर व आप के बिना मैं एक रेगिस्तान सी विरान बन जाती हूँ।)

बिन तेरे मैं क़तरा भी नहीं

( अगर आप साथ हो तो मेरा अस्तित्व एक अनंत महासागर सा शक्तिशाली हो जाता और
अगर आप मेरे साथ नहीं तो मेरा अस्तित्व एक पानी के बूँद जितना भी नहीं।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

@@@@@@@@@

तू मेरे चेहरे पे है
राहत सा जो ठहरा हुआ

(मेरे सिकीलधे बाबा,
आपको पाकर दिल में जो एक ही अनहद नाद निकल रहा है कि "जो पाना था सो पा लिया"
उस कारण, मैं जिस स्थूल शरीर को ले कर पार्ट बजा रहा हूँ उस शरीर के चेहरे पर  बेफिक्र बादशाह सी राहत समान ठहरे हुए हों आप।)

मैं भी तेरे हाथों में
क़िस्मत सा हूँ, बिखरा हुआ

(जैसे किस्मत की लकीरें हाथ से मिटाई नहीं जा सकती...
वैसे ही मैं भी तुम्हारे हाथों में किस्मत की लकीरों सा बिखरा हुआ हूँ
अर्थात माया,प्रकृति और सर्व आत्माएं इकठे होकर भी मुजे आपसे और आपको मुज से संकल्प मात्र भी जुदा नहीं कर सके।)

तू मेरी रूह सा है
तुझको छू के मैं ज़िंदा लगूं

(जैसे शरीर में अगर आत्मा न हो तो उस शरीर की कोई भी value नहीं होती।
वैसे ही मैं शरीर हूँ और आप मेरी आत्मा...
तो मैं शरीर आप आत्मा से combined रह कर ही अपने को जिन्दा महसूस करता हूँ।)

जब भी मैं मुझको देखूं
मुझ में भी मैं तुझ सा लगूं

(और इसीलिए तो...
जब भी मैं अपने को देखती हूँ तो 'विष्णु एवं शंकर-पार्वती के चित्र मुआफ़िक' हम दोनों एक दूजे में समाये हुए होने के कारण, जैसे आप हो वैसे ही मैं मुजको सर्व शक्तिओ/गुणों में आपके समान सारे ब्रह्मांड का मालिक अभी से ही महसूस करता हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ

Other Movie Songs to submerge in the love of supreme

Click